बेकारी

अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव का जीवन श्रेष्ठतम माना जाता है । सभ्यता तथा संस्कृति ने मानवीय जीवन को उन्नत बनादिया है । मानव अपना गुजारा करने के लिए मेहनत करता है, कोई न कोई उद्योग धंधा अपना लेता है। जब उसे कोई काम करने न मिलता तथा जीविकोपार्जन के लिये कोई चारा नहीं तो उसके सामने बेकारी की समस्या उठ खडी होती है ।

निरक्षरता को हटाने की कोशिश हर जगह की जाती है । उन्नत शिक्षा का इंतजाम किया गया है । इसके फलस्वरूप शिक्षा का, एक मात्र उद्देश्य यह रह गया है कि शिक्षा जीविकोपार्जन के लिए है । सर्वांगीण विकास के उददेश्य से शिक्षा दी जाती है पर आज शिक्षा का एक मात्र उददेश्य 'दाल रोटी' का उददेश्य हो गया है । इसलिए पढ़े लिखे लोगों का यही आग्रह है कि शिक्षा प्राप्त करके कोई न कोई सरकारी नौकरी में लग जायें । ध्यान देने की बात है कि शिक्षितों की संख्या बढने के अनुसार नौकरी नहीं बढनी जिससे बेकारी की समस्या उठती है ।

बेकारी की समस्या पर विचार करने से स्पष्ट है कि शिक्षितों में ही नहीं बल्कि अशिक्षत और गाँव वालों में भी यह समस्या बढ गयी है । शिक्षितों के बीच की बेकारी के संबन्ध में ऊपर बनाया गया है । गाँव की अवस्था देखें। गाँवों के देश भारत में ग्रामीण जनता खेती बारी से ही गुजारा करने के लिए बान्धा ही जाती है । फलस्वरूप उन्हें वर्ष भर में काम मिलने की अवस्था ही नहीं आती । आज भी कई प्रान्तों में बरसात के आधार पर खेती होती है जिससे मौसमी बेकारी संभव है ।

व्यक्तिगत, सामाजिक, और देशीय उन्नती के लिए, भलाई के लिए यह आवश्यक है कि लोग तनतोड मेहनत करें । सरकारी कर्मचारी बनने की अभिलाषा छोडकर अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी काम करने के लिए तैयार हो जायें । सरकारी कर्मचारियों का आदर सत्कार करनेवाले मामूली लोगों से यही अनुरोध है कि वे किसान का, मजदूर का तथा भिन्न भिन्न काम करनेवालों का उसी प्रकार आदर

MANOJ. E.

सत्कार करें । प्रत्येक काम का अपन अपना महत्व है । कोई काम श्रेष्ठ या कोई निकृष्ठ नहीं । स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरु ने उदबोधन किया था कि देश की गरीबी को दूर करने के लिए अपनी मेहनत से कोई चीज पैदा करें । जब एक नयी चीज पैदा होती है तब नया धन आ जाता है । अगर लोगों का ध्यान इस ओर मुडता है तो बेकारी की समस्या ही नहीं उठती ।

आज विद्यालयों से बाहर निकलने वाले स्नातक यह नहीं जानते कि व्याबहारिक जीवन में क्या करना है, उनके हाथ में केवल प्रमाणपत्र है और कुछ नहीं । ऐसी शिक्षा रीति को बदल देने का समय कब हो चुका है । पर सरकार को, राजनीतिक दलों को, नेताओं को इसपर ध्यान नहीं । भारतीय पाठशालाओं की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो कर्म से सम्बधित हो । छात्र अपनी रुचि के अनुसार कोई धन्धा पाठशाला से ही सीख ले । प्रमाणपत्र प्राप्त होने के साथ वह उस उदयोग धंधे में भी प्रवीण हो । तब बेकारी की समस्या शिक्षितों में नहीं के बराबर होगी ।

भारत में सशक्त होनेवाली बेकारी की समस्या को हल करने के लिए यह अनुपेक्षणीय है कि ग्रामीण कोई न कोई ग्रामोदयोग में समर्थ हो जायें । उस ग्राम में प्राप्त कच्चे माल की सहायता से वहाँ लोगों को काम मिल सकता है । मौसमी बेकारी भी इसी से दूर हो सकती है । देखा जाना है कि वर्षा में पाँच छः महीने खेतीहर मजदूर निठल्ला बैठते हैं । उनकी गरीबी को, बेकारी को दूर करने के लिए सबसे अच्छा साधन कुटीर उदयोग का विकास करना ही है । भारतीयों को चाहिए कि वे भारत की बनी हुई वस्तुओं का ही प्रयोग करें फेशन के भ्रम में पडकर विदेशी चीजों पर आस्था रखें तो हमारे ग्रामोदयोगों का विकास नहीं होगा और यहाँ की बकारी दूर नहीं होगी ।

बेकारी की समस्या वैयक्तिक परिश्रम से हल नहीं होगी । उसी के लिए चाहिए कि लोग कठिन से कठिन प्रयत्न करके अपना जीवनस्तर उठायें । सरकारी नौकरियों पर ही ध्यान न-दें ।